



भारत का यज्ञपत्र

The Gazette of India

ब्राह्मारण

EXTRAORDINARY

भाग II — भाग 3 — उप-भाग (ii)

PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राविकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

दो. 124] नई दिल्ली, शुक्रवार, मार्च 28, 1980/चैत्र 8, 1902

No. 124] NEW DELHI, FRIDAY, MARCH 28, 1980/CHAUTRA 8, 1902

इस भाग में विभिन्न पृष्ठ संलग्न ही जाती हैं जिससे ही यह अलग संकलन के लिए भी
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

वित्त मंत्रालय

(राजस्त्र विभाग)

भारत

नई दिल्ली, 28 मार्च, 1980

स्टाम्प

का. आ. 226(अ) :—भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 (1899 का 2) की
भारा 8 की उपधारा (1) के खण्ड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते
हुए, केन्द्रीय सरकार उस शाल्क को माफ करती है, जो कलात्मक राज्य वित्तीय
नियम द्वारा प्रोमिसरी नोटों के रूप में जारी किए जाने वाले एक करोड़ दस लाख
रुपए मूल्य के बन्ध-पत्रों पर उक्त अधिनियम के अन्तर्गत प्रभार्य है।

[सं. 8/80-स्टाम्प-फा. सं. 33/12/80-वि. कर]

जी. एस. महरा, अवर सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

ORDER

New Delhi, the 28th March, 1980

STAMPS

S.O. 226(E).—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of Section 9 of the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the bonds in the form of promissory notes to the value of one crore and ten lakhs of rupees, to be issued by the Karnataka State Financial Corporation, are chargeable under the said Act.

[No. 8/80-Stamp-F. No. 33/12/80-ST]

G. S. MEIRRA, Undr Secy.